Available online at http://www.nrjp.co.in

Journal of Management Science,
Operations & Strategies, (E- ISSN 2456-9305)
Vol. 4, Issue, 01. 31-38p, April 2020

National Research & Journal Publication

Review Article

1857 के स्वाधीनता संग्राम: सामाजिक परिप्रेक्ष्य के विविध आयाम

चंद्र मणि

नेट गेस्ट टीचर रांची यूनिवर्सिटी, रांची

Abstract

यह भी माना जाता है कि सन् 1857 की क्रांति के मूल में मुस्लिम धार्मिक कट्टरता भी शरीक रही थी लेकिन यह विचार एक सुविचारित साजिश है। सन् 1857 के लोक संग्राम की गरिमा कम करने के लिए ब्रिटिश इतिहासकार कभी उसे 'जेहाद बताकर सांप्रदायिक रंग देते हैं तो कभी क्षेत्रीय एवं अपदस्थ जागीरदारों का दोष बताते हैं। ब्रिटेन के नागरिकों की हमदर्दी प्राप्त करने के लिए विदेशी इतिहासकार इसे 'ईसाइयत का विरोध एवं प्राचीन परंपराओं को पुनः स्थापित करने का प्रयास कहकर भी क्रांति को अस्वीकार करते हैं।" 1857 की क्रांति को उत्तर भारत के भू–भाग तक ही सीमित माना जाता है, क्या यह राष्ट्रीय क्रांति नहीं थी, ब्रिटिश उपनिवेशवादी 1857 के संग्राम के महत्व को सीमित करने के लिए उसे क्षेत्रीय बगावत भी ही साबित करना चाहते थे किंतु तथ्य इसे असत्य साबित करते हैं। यह क्रांति गुजरात से लेकर पूर्वी भारत में चटगांव तक थी और उत्तरी भारत में इस मुक्ति संग्राम का प्रभाव ज्यादा था, किंतु इसका असर पूरे देश पर पड़ा। गंगा-यमुना के मैदान के मध्य का जो क्रांति सक्रिय भू–भाग था वह यूरोप के कई अनेक देशों यथा फ्रांस, आस्ट्रिया और पर्सिया के समग्र क्षेत्रफल से कहीं ज्यादा विस्तृत था।

Copyright©2020 *चंद्र मणि* *This is an open access article for the issue release and distributed under the NRJP Journals License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.*

कुछ इतिहासकार 1857 की क्रांति को राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष इस कारण नहीं मानते कि इसमें पूरा राष्ट्र शामिल नहीं था। यदि यह अनिवार्य शर्त है कि संपूर्ण राष्ट्र में विद्रोह हो तभी उसे 'राष्ट्रीय क्रांति' कहा जाए तो फिर फ्रांस की क्रांति, या रूस की क्रांति को क्या कहा जाना चाहिए। चीन की क्रांति की परख क्या इसी मानदंड पर करना संभव है। प्रत्येक क्रांति उसके उद्देश्य से ही पहचानी जाती है। क्रांति का क्षेत्र उसके समक्ष गौण हो जाता है। यूरोप में हुई अनेक क्रांतियां भी विस्तृत भू-भाग पर नहीं हुई थीं लेकिन उनहें मुक्ति संग्राम का ही दर्जा प्राप्त है।

1857 की क्रांति को राष्ट्र का प्रथम स्वाधीनता संग्राम क्यों न माना जाए इस प्रश्न को हल करने के

लिए प्राय दो तरह के दृष्टिकोण को सामने रखा जाता है। चंद लोग क्रांति कार्यों का प्रारंभ उस समय से मानते हैं जब विदेशी हमलावर भारत में आए और देश पर अधिकार जमाया। उनके शासन के विरोध को स्वाधीनता संग्राम का नाम देते हैं। भारत पर तो कई हमलावरों ने शासन किया। इस सूची में आर्य, शक, सीथयन, यूनानी, कुषाण व मुसलमान इत्यादि कई हमलावर आते हैं। उचित रूप से तर्कसंगत यही है कि जिन जातियों ने भारत पर अधिकार करके शोषण किया और इस देश को अपना भी नहीं कहा उनको हम विदेशी शासक कह सकते हैं। अतः अंग्रेजों के खिलाफ राष्ट्रीय महासंग्राम को देश की प्रथम क्रांति कहना उपयुक्त होगा।

उस समय तक राष्ट्रीय भावना का उदय नहीं हुआ था। कुछ विद्वान यह तर्क भी देते हैं और इस कारण 1857 के संग्राम को क्रांति नहीं मानते। जाहिर है कि उस क्रांति की कोई केंद्रीय सत्ता नहीं थी लेकिन आलोचकों का तर्क इस कारण स्वीकार्य नहीं है, क्योंकि संघर्षरत लोगों ने अंग्रेजी शासन का विरोध करने का प्रयास किया था। यह विरोध देश के कई स्थानों में किया गया था। अतः उसे स्थानीय मुठभेड़ बताकर खारिज नहीं किया जा सकता है। इस क्रांति को 15 अगस्त, 1947 की आजादी का पहला कदम कहा जा सकता है कई विद्वान इस क्रांति को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के चश्मे से देखने को तैयार संपूर्ण प्रयास नष्ट हो गया था। यह सोच सच्चाई के कोसों दूर है। यह सच्चाई भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास के अवलोकन से साफ हो जाएगी कि यह क्रांति देशवासियों हेतु सदैव प्रेरक रही है। कई अनुसंधानकर्ताओं ने 1920 के समय राष्ट्रीय चेतना की पड़ताल भी की, जब उन्होंने पाया था कि जनमानस में 1857 की क्रांति का उजास मौजूद है और वे उस क्रांति का सम्मान भी करते थे।

सन् 1857 की क्रांति के प्रमुख नायकों में किन्हें चिन्हित किया जाए यद्यपि अंग्रेज इतिहासकार, यह साबित करने का मिथ्या दावा करते हैं यह 'सिपाहियों का गदर था। जिसकी अगुआई उन जागीरदारों ने की थी। जिनको उनके शासन से दूर कर दिया गया था। यह नजरिया बेहद संकीर्ण है, क्योंकि इस संग्राम में प्रजा ने बड़ी संख्या में भाग लिया था। कई ब्रिटिश राजनेताओं, पत्रकारों व इतिहासकारों ने इसे 'कौमी गदर' ही कहा। चूंकि प्रजा त्रस्त थी, कृषकों को विदेशी राज की भू-राजस्व नीतियों ने भूखों मरने पर विवश कर दिया था। युवा लोग बेरोजगार थे। सन् 1857 का विद्रोह प्रजा का भी विद्रोह था।

जागीदार शासक कहीं तो अंग्रेजों से युद्ध करने खुद ही सामने आ गए। कहीं उनकी प्रजा का उन पर दबाव रहा। ज्यादातर राजा-महाराजा एवं जागीरदार अंग्रेजों की मदद करते रहे लेकिन असंगठित होते हुए भी यह राष्ट्रवादी संग्राम था। कई शोधकर्ताओं ने इस क्रांति के नायकों को प्रस्तुत किया है। मजूमदार ने इस संघर्ष को जागीरदारों का विद्रोह कहा है। अतः बाबू कुंवर सिंह, रानी लक्ष्मीबाई, मौलवी अहमद शाह और बेगम हजरत महल इत्यादि की बहादुरी और बलिदान को भारतवासी आज भी स्मरण करते हैं। किंतु सन् 1857 के संग्राम की असली हकदार तो भारतीय प्रजा ही थी। इस क्रांति में 22 लाख लोगों ने अपनी

शहादत दी थी। उस समय कुछ राजा-महाराजाओं व जागीरदारों ने अपना योगदान दिया, किंतु क्रांति जब कुचल दी गई तो सामंतशाही के पोषकों ने अपनी निष्ठा पुनः अंग्रेजों की ओर मोड़ दी थी क्योंकि वे जानते थे कि अंग्रेजों की नाराजगी की कीमत पर वे अपनी शान शौकत बनाए नहीं रख सकते। अतः अधिकांश ने गदर की भावना के साथ गद्दारी ही की थी।

अंग्रेजों ने भी फिर सामंत वर्ग के लोगों को अपनी ओर मिलाने के लिए उनका तुष्टिकरण करना आरंभ कर दिया था। फिर देशी और विदेशी शासक दोनों ने ही प्रजा का शोषण करना आरंभ कर दिया था। यह कहा जा सकता है कि 1857 की क्रांति के नायक आम व्यक्ति ही थे, क्योंकि क्रांति की नाकामी के बाद अंग्रेजों ने प्रतिशोध लिया सन् 1857 के विद्रोह में 22 लाख लोग मारे गए। दस करोड़ से ज्यादा कृषक आबादी की रूचि ब्रिटिश शासन के खात्मे में थी। गुजरते समय के साथ कई शोध इस क्रांति के बारे में रही हैं क्रांति में समाज के किन तबकों ने अमूल्य योगदान दिया था। इससे यह जाना जा सकता है कि लोगों की सोच यदि एकात्मकता या अनेकता थी, तो उसके पीछे कारण क्या थे। अवाम उस क्रांति के साथ क्यों जुड़ी हुई थी। क्रांति को गतिशील किसने किया है, उसे शिथिल किसने किया, क्रांति से अंग्रेजों ने भविष्य के लिए क्या सबक हासिल किया था। इस प्रकार के प्रशनों का समाधान करने के लिए ही 1857 की क्रांति पर शोधपरक पुस्तकें लिखी जाती रहेंगी।

क्रांति की विफलता के बाद ब्रिटिश दमन चक्र चला था ताकि बची हुई चिंगारी को भी बुझा दिया जाए। यही कारण था कि क्रांति के तुरंत बाद में वर्षों तक क्रांति पर कोई भी सकारात्मक लेखन सामने नहीं आ सका था। उस समय की किताबें ब्रिटिश सेंसर से युक्त थी। इस कारण क्रांति का सही रूप से लेखन ही किया जा सका। अंग्रेजी पुस्तकों में क्रांति का भ्रामक चित्रण किया गया और उसकी गरिमा को भी खंडित किया गया। कालांतर में 1857 की क्रांति को लेकर अंग्रेजों ने साहित्यिक रचना कर्म को आजादी दी भी, तो दस्तावेज उनके ही द्वारा प्रदान किए गए थे। फिर भी लोगों ने विभिन्न संस्मरणों को प्रकाशित करके उसे सटीक बनाने का प्रयास अवश्य ही किया था। फिर भी क्रांति का सही स्वरूप 1900 की समाप्ति तक सामने नहीं आया था।

तदनंतर सन् 1907 में वीर सावरकर की पुस्तक का प्रकाशन हुआ। इसमें संग्राम का आजादी की जंग कहा गया था किंतु तब भी पुस्तक में समाज के सभी लोगों की भूमिका प्रदर्शित नहीं की जा सकी। मौलाना अबुल कलाम 'आजाद' ने भी 1857 की क्रांति को शब्दों में ढालने का प्रयास किया था। और उस समय 'अधिकारिक पुस्तक' लिखने का जिम्मा एन.एन. सेन को दिया था लेकिन सेन की पुस्तक पर सरकारी आंकड़े ही भारी पड़े थे। इस कारण लेखक के रूप में सेन ने क्रांति को कोई उल्लेखनीय महिमा प्रदान नहीं की और न ही उस पुस्तक ने लोगों के बीच किसी भी प्रकार की कोई लोकप्रियता ही प्राप्त की। अंग्रेजों के शासन का खौफ था।

यह संभव ही नहीं था कि गैर ब्रिटिश अभिलेखाकार के आंकड़ों से विचारोत्तेजक पुस्तक को लिखा व प्रकाशित किया जाए। लेकिन सन् 1959 में कार्ल

मार्क्स के वे लेख दुनिया के सामने आए जो 1857 की क्रांति को दृष्टिगत रख कर लिखे गए थे। कार्ल मार्क्स ने 1857 की घटनाओं को बतौर विचारक पहली बार यह कहने का हौसला किया था कि वह 'जन क्रांति' थी। उसके बाद के लेखकों ने जब जाकर 1857 की प्रथम क्रांति के रूप में उसे चिन्हित करना आरंभ किया था। एक लाभ यह भी हुआ कि जन क्रांति के कारणों की तलाश की गई, तब उसके मूल में अंग्रेजों की शासन व्यवस्था की कमियां रेखांकित की गई थीं। भारत की धार्मिक व सामाजिक मान्यताएं और ब्रिटिश शासन पद्धति के मध्य सामंजस्य नहीं बैठ सकता था। अंग्रेज भी शासन करने की नहीं बल्कि शोषण करने की नीति अपनाए हुए थे। वे भारत को कच्चे माल और मजदूरों की मंडी ही बनाए रखना चाहते थे। लेकिन इतने विशाल देश पर शासन करने के लिए ब्रिटिश नागरिकों की ज्यादा आवश्यकता थी। लोक-दिखावे के लिए उन्हें भारत में सुधारवादी कार्य भी करने थे। एक बार क्रांति का मजबूत ठप्पा लगने के बाद 1857 की घटनाओं के बारे में ब्रिटिश इतिहासकारों ने भी माना क वह बगावत लोगों के हृदय से उभरी थी।

इस संघर्ष की एक खासियत यह भी थी कि विदेशियों के खिलाफ इस युद्ध से धार्मिक भावनाएं भी जुड़ी रही थीं। हिंदू-मुस्लिम इसे विदेशी शासकों के खिलाफ 'पवित्र युद्ध' कहते थे। किंतु यह युद्ध सांप्रदायिक भावना से ग्रसित नहीं था। साम्राज्यवाद का सामना करने के लिए लोग जाति व धर्माधता से ऊपर उठकर संघर्षरत थे। इस क्रांति में देश के प्रति प्रेम और सांप्रदायिक एकता की जिस भावना का उदय हुआ था। वह हमारी बेशकीमती धरोहर रही थी। यह राष्ट्रवाद बहु-संस्कृतिवाद की देन बना। विभिन्न धर्मों, विभिन्न क्षेत्रों व लोगों का एक उद्देश्य के लिए एकत्र होकर कुर्बानी देने के लिए जुट जाना एक महान घटना रही है।

उस दौरान बहादुरशाह जफर ने तो भरतपुर, अलवर व जोधपुर जैसे राज्यों के शासकों को यह सुविधा भी दी थी कि यदि वे अंग्रेजों के खिलाफ एक जाएं तो वह अपनी हुकूमत भी त्यागने को तैयार हैं और उनके राज्यों को मिलाकर एक राज्य संघ का गठन भी किया जा सकता है। सन् 1857 की महान क्रांति ने सोई हुई आवाम को जगाने का कार्य भी किया था। देश की अवाम ने जाग्रत होने के बाद शिक्षा, धर्म, राजनीति और साहित्य में ज्यादा रूचि लेना आरंभ कर दिया था। जीवनस्तर को उन्नत करने व सामाजिक कुरीतियों से लड़ने का माद्दा भी सन् 1857 की क्रांति के बाद से ही उदय हुआ था।

1857 की क्रांति का निष्कर्ष निम्न बिंदुओं के आधार पर सन् 1857 की विशेषताओं को समझा जा सकता है :

1- इसे स्वाधीनता संग्राम नहीं कहा जा सकता, उस समय तक भारत एकसूत्र में पिरोया हुआ नहीं था।

2- बंगाल की फौज का असर उत्तरी व मध्य भारत के कुछ भागों में मौजूद था।

3- इस बगावत पर मुंबई, बंगाल व पंजाब की सेनाओं द्वारा अंग्रेजों ने काबू पा लिया था।

4- यह अटल सच्चाई है कि आधे से ज्यादा राजे-महाराजे इस क्रांति में शामिल नहीं थे।

5* 1880 में जिस राष्ट्रीय आंदोलन को हम देखते हैं, उसमें 1857 की क्रांति का कोई भी प्रेरक तत्व मौजूद नहीं था।

6 ज्यादातर आजादी के सिपाहियों के पुरातन मुगल शासक के शासन को फिर से स्थापित करने का प्रयास किया, जो उस समय राष्ट्रीय भावना का प्रतीक बना हुआ था।

7 अवध, बुंदेलखंड व रूहेलखंड में यह 'जनक्रांति' थी क्योंकि यह सिर्फ सैनिकों तक सीमित न होकर प्रजा में भी गहराई तक उतरी हुई थी।

8- सैनिकों का लक्ष्य अपने क्षेत्र के छोटे राज्यों को फिर से अस्तित्व में लाना नहीं था। लोग अंग्रेजो को देश से बाहर कर मुगल हुकूमत की पुनः स्थापना चाहते थे।

9- बंगाल के सैनिकों को संपूर्ण देश में जाना पड़ा था। इस कारण राष्ट्रीय भावना का अभ्युदय आरंभ हुआ।

10- यह क्रांति देश के कुछ भागों तक सीमित थी, परंतु उद्देश्य यह था कि संपूर्ण भारत से अंग्रेजों को बाहर कर दिया जाए।

11- देशवासियों को नारा दिया गया था कि धर्म और देश के लिए जीवन कुर्बान किया जा सकता है।

12- जिन राजाओं से अंग्रेजों ने अधिकार छीन लिए थे, उन राजाओं को क्रांतिकारी सैनिकों ने तलाश करके नेतृत्व सौंपा था।

13– विद्रोही सैनिकों ने संघर्ष करते हुए नए शासन तंत्र के संकेत दिए थे।

14- शहजादे फिरोजशाह ने देश की प्रजा को बताया था कि ब्रिटिश सत्ता उखाड़ फेंकने के बाद देश में किन-किन कार्यों को किया जायेगा।

15- अवध में तो गांव-देहात की आवाम भी इस क्रांति में डटकर भागीदारी कर रही थी।

16- क्रांति की तैयारियां विभिन्न अंग्रेज रेजीमेंट्स में आरंभ हो गई थीं। भारतीय सिपाहियों ने परस्पर संपर्क बनाए रखने के लिए डाक व्यवस्था का उपयोग किया था।

17- क्रांति किसी क्षणिक जज्बे से उत्पन्न नहीं हुई थी। उसकी तैयारियों के पुख्ता प्रमाण भी मौजूद थे। गुप्त समितियां भी संचालित रही थीं।

18- अंग्रेजों की लोक विरोधी नीतियों के कारण रोष पनपा था और संचार साधनों के माध्यम से उस रोष का केंद्रीकरण हुआ था। अंग्रेजों को भी क्रांति के विषय में सूचनाएं प्राप्त हो चुकी थीं। इस कारण टेलीग्राफ प्रणाली पर नजर रखी जा रही थी। सैनिकों के पत्रों को भी खोलकर पढ़ा जा रहा था कि वे किस इरादे को पूर्ण करना चाहते हैं।

19- यह स्पष्ट है कि क्रांति का विचार सुनियोजित था।

20- सैनिकों में विभिन्न कारणों से अंग्रेजों के प्रति रोष था। चर्बीयुक्त कारतूस ही एक मात्र वजह नहीं रही थी।

1857 के स्वाधीनता संग्राम की सामग्री की शोध जब वृहद स्तर पर की जानी आरंभ हुई तो नई-नई जानकारियां प्राप्त हुईं। पुराने तथ्यों व घटनाओं से नए संकेत प्राप्त होने लगे। विलियम डिरलपिल के द्वारा लिखी गई पुस्तक 'लॉस्ट मुगल' पुस्तक में कई दस्तावेजों का हवाला दिया गया था। सरकारी अभिलेखाकार में भी कई प्रमाणित साक्ष्य रखे हुए थे। उन पर अनुसंधान कार्य होना बाकी था। 20वीं शताब्दी के आरंभ एवं मध्यकाल में 1857 की क्रांति को साहित्य में भी स्थान प्राप्त हुआ। सुभद्रा कुमारी चौहान की निम्नलिखित पंक्तियों से समझा जा सकता है कि 1857 की क्रांति ने जन जीवन में किस प्रकार की पैठ बना ली थी।

- कुटिया में थी विषम वेदना, महलों में था आहत मान।
- वीर सैनिकों के मन में था, अपने पुरखों का अभिमान।।
- महलों में दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी।
- यह स्वतंत्रता की चिंगारी अंतरम से आई थी।।

सन् 1857 की क्रांति पर बाद में काफी कुछ लिखा गया। वीर विनायक सावरकर ने महज 24 वर्ष की उम्र में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नाम से मराठी में पुस्तक लिखी थी, जो लंदन में प्रकाशित होकर भारतभूमि पहुंची थी। 1857 की राष्ट्रव्यापी क्रांति अपना प्रभाव क्यों नहीं जमा सकी। क्रांति की नाकामी की क्या वजहें रही थीं? निश्चय ही इन प्रश्नों पर विचार करने से ही तत्कालीन भारतीय संरचना व जनमानस की सोच को जाना जा सकता है। आजादी की भावना को कुचलने के लिए अमानवीय जुल्म ढाए गए और क्रांति की चिंगारी का प्रस्फुटन न होने देने के लिए दमन चक्र चलाया गया। प्रस्तुत अध्याय की विवेचना द्वारा यह सीख भी प्राप्त की जा सकती है कि एक सद्विचार की सुरक्षा के लिए आम भारतीयों को किस प्रकार से एकजुट होना चाहिए ताकि नागरिकों के अधिकार सुरक्षित रह सकें।

आजादी मनुष्य का स्वयंसिद्ध अधिकार है और स्वाधीनता की भावना मानव में गहरे तक पैठी रहती है। अतः इस भावना को सदैव क लिए कभी भी नष्ट नहीं किया जा सकता। क्रांति संघर्ष जय और पराजय के मार्गों से होते हुए अपनी मंजिल तक देर सबेर पहुंच ही जाता है। इतिहास गवाह है कि विश्व में क्रांति संघर्ष एक ही दफा में सफल नहीं हो पाए थे। वैसे ही क्रांति संघर्षों को कामयाबी या नाकामी के शीर्षकों से तय नहीं किया जा सकता, क्योंकि क्रांति में न तो हार स्थाई होती है और न किसी एक हार से इसका महत्व ही सीमित हो जाता है। प्रमुख बाद तो होती है क्रांति का उद्देश्य और उद्देश्य के पीछे की आकांक्षा इसका परखने की एक मात्र कसौटी है मानव समाज को इसका दिया जाना। निर्णय तो यह करना होता है कि प्रतिरोध की चेतना ने समाज के कितने हिस्से को और कितनी गहनता तक स्पर्श किया व इससे

सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक चिंतन के दृष्टिकोण व संबंधों में कितना बदलाव आया।

1957 का क्रांति संग्राम विदेशी साम्राज्यवादी सत्ता के खिलाफ एक संगठित जनाक्रोश था जो अनिवार्य था। मुक्ति आकांक्षा की यह क्रांति, स्वाधीनता का अनुपम उत्सर्ग, भारतीय इतिहास की अमूल्य धरोहर है, जिस पर किसी भी भारतीय को गर्व करना चाहिए कि उनके पुरखों में स्वाधीनता की ऐसी उदात्त उमंग थी कि उसके समक्ष जीवन का कद भी बौना हो गया था। इसने समाज के बड़े वर्ग को स्पर्श किया व इसमें समाज के सभी वर्गों के प्रयास सम्मिलित थे। यह बात काफी हद तक सत्य है। कि इस संघर्ष के पीछे न तो कोई स्थापित राजनीतिक दल था न कोई सुपरिभाषित क्रांति विचारधारा। हालांकि इस बारे में क्रांति शुरू होने से पूर्व कुछ मंत्रणाएं अवश्य हुई। सैनिकों की खुफिया समितियां भी बनी किंतु यह सामान्य स्तर की थीं। पूर्णतया योजनाबद्ध ढंग से तमाम कार्य होना तयशुदा कार्यक्रम बनना या सभी की भूमिकाएं निश्चित होना इत्यादि विशेषताएं इसमें नजर नहीं आतीं। किसी स्थान पर तो विद्रोह आंरभ हो जाने के बाद योजना बनाने का कार्य शुरू हुआ। यह क्रांति संघर्ष तो परिस्थितिजन्य अनुभव के प्रकाश में परवान चढ़ा और अपने आखिरी अंजाम तक पहुंचा। बेशक उसे उस समय अपेक्षित कामयाबी नहीं मिली लेकिन उससे सामाजिक सोच पर असर किया, हिंदू-मुस्लिम एकता को परवान चढ़ाया।

समाज के तमाम वर्गों को उद्वेलित व भारतीय लोक जन की सुषुप्त शक्ति को जागरूक किया। इसी क्रांति की प्रसव वेदना से भारत में अखंडता का प्रादुर्भाव हुआ, भारतीयता की भावना पल्लवित हुई, वृहद राष्ट्रीय चेतना को बल मिला, अतः यह स्वतंत्रता संघर्ष विफल होकर भी बेदह सार्थक साबित हुआ, क्योंकि इसने स्वाधीनता के जज्बे की अमरसता को अनश्वर जड़ें प्रदान कर दी थीं। 13 उन्हीं जड़ों पर आज हमारे राष्ट्र स्वाधीन बनकर खड़ा है। आजादी की कीमत का मूलयांकन भी हम तभी कर कते हैं, जब हमें ज्ञात हो कि हमारे पुरखों ने 1857 की क्रांति में कई अविस्मरणीय कुर्बानियां की हैं। सन् 1857 की क्रांति एक प्राथमिक कदम था। जिसने 15 अगस्त 1947 की मंजिल तक पहुंचाया था। फिर भी प्राथमिक रूप से 1857 की क्रांति सफल नहीं हो सकी थी। अतः उसके कारणों की विवेचना करना यहाँ प्रासंगिक होगा।

सन्दर्भ सूची

1. गाधी मोहनदास कर्मचन्द, स्त्रियाँ और उनकी समस्याएँ, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, आहमदाबाद, 1959, पृ.4

2. यू.एस. मोहन राव, महात्मा गांधी का सन्देश, प्रकाशन विभाग, सूचना एवंप्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली 1969, पृ.105 |

3. सूचेता कृपलानी, नारियों के नेता और शिक्षक एस.राधाकृष्णन, महात्मा गांधी 100 वर्ष, सर्वोदय साहित्य प्रकाशन, वाराणसी 169, पृ.227

4. यू.एस. मोहनराव, उपरोक्त, पृ.106 | 5. गांधी मोहनदास कर्मचन्द- उपरोक्त पृ.49 |

6. वही. पृ.57।

7. अनु बंधोपाध्याय, बहुरूपी गांधी, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,नई दिल्ली, 1971, पृ.136 |

8. महात्मा गांधी, यंग इंडिया (1919-1922), ट्रिपलकेन मद्रास, 1022, पृ.74 |

9. महात्मा गांधी, महिलाओं से, बनारस, 1949, पृ.167 |

10. गांधी मोहनदास कर्मचन्द- उपरोक्त, पृ.62

11. एम.के. गांधी, विमेन एण्ड सोशल इनजस्टिस, नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस,अहमदाबाद, 1947, पृ.99

12. श्रीमान नारायण, महात्मा गांधी, द आटोमिक मैन, सौभ्या पब्लिकेशन प्रा.लि.बम्बई 1971, पृ.34 |

13. गांधी मोहनदास कर्मचन्द- उपरोक्त, पृ.91

14. रामचन्द्र वर्मा, महात्मा गांधी, गांधी हिन्दी पुस्तक, भण्डार, बम्बई, 1978, पृ.330-331 ।

15. रोमा रोला, महात्मा गांधी जीवन दर्शन, लोक भारती-प्रकाशन, इलाहबाद, 1986,पृ.58 |

16. आत्म संयम, महात्मा गांधी के लेखों का संग्रह, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन,1968, पृ.66 |

17. एम.के. गांधी, विमेन एण्ड सोशल इनजस्टिस्, पृ. 162-163

18. सम्पूर्ण गांधी वांडमय, खण्ड 21, पृ.226 |
19. गांधी, मो.क., उपरोक्त, पृ.30 |

20. सुचेता कृपलानी 'नारियों के नेता और शिक्षक' एम. राधाकृष्णन, महात्मा गांधी 100 वर्ष, पृ.299